Bhram Rishi KrishanDutt Ji Maharaj PAtrika September 2011

।। ओ३म् ।।

याग

जीते रहो!

देखो मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेद-मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। यह भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा आज हमने पूर्व से जिन वेद-मन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेद-वाणी का प्रसारण होता रहता है जो उस परमपिता-परमात्मा की महिमा से निहित है और वेद का मन्त्र कहता है यज्ञनम् ब्रह्मा वर्णस्सुतम् वह परमपिता-परमात्मा यज्ञोमयी स्वरूप हैं याग उसका आयतन है, उसका गृह है, उसका सदन है। क्योंकि हमारे आचार्यों ने सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके वर्तमान के काल तक नाना प्रकार के यागों का व्यवधान किया है और उसके ऊपर उन्होंने गम्भीरता से अध्ययन किया और परमपिता-परमात्मा को वेद-मन्त्रों ने यज्ञोमयी स्वरूप कहा है क्योंकि वह याग में रमण करने वाला है और वह यज्ञोमयी स्वरूप है। इस परमपिता-परमात्मा ने जब सृष्टि का सृजन किया तो यह मानों यह ब्रह्माण्ड अयम् अमृतम ब्रह्म ब्रहे अव्रतम् यज्ञम् ब्रहा यह संसार एक प्रकार की यज्ञशाला है और यज्ञशाला में मानों विद्यमान हो करके स्वयं इसका नियमन कर रहे हैं। मेरे प्यारे आत्मा यज्ञमान है परमात्मा स्वयं ब्रह्मा हैं और पंच-महाभूत मानों कोई उनमें से उदगाता है, कोई अध्वर्यु है और कोई मानों देखो इसमें होता बन करके याग हो रहा है।

याज्ञिक

तो विचार आता है कि परमपिता परमात्मा का यह जो भव्य ब्रह्माण्ड है इसमें प्रत्येक मानव अपने में याज्ञिक बन करके आया है

प्रभु से विनय

भगवन! मैं प्रातःकाल की पवित्र वेला में आपके चरणों की वन्दना कर रहा हूँ। वन्दना का अभिप्राय है कि मैं अपने हृदय को उज्जवल बना रहा हूँ। आपकी शुद्ध पवित्र अमृत सम्वेदना के साथ प्रभु! मैं अपने हृदय को निर्मल और स्वच्छ जल से स्वच्छ बनाना चाहता हूँ। हे प्रभु! तेरा जो अमृतमयी ज्ञान है, अमृतमयी जो तेरी नम्रता है, अमृतमयी जो तेरी उदारता है, अमृतमयी जो तेरा उद्गम है, अमृतमयी जो हृदय है, अमृतमयी जो तेरा यह जगत् है, अमृतमयी, जो प्रभु मेरी ज्ञान की एक कामना है, उससे मैं अपने हृदय को पवित्र बनाना चाहता हूँ। हे प्रभु! तू कितना उद्गम है, तू कितना उदार है, तू कितना महान् है, तू कितना व्यापक है, तेरी कितनी उज्जवलता प्रभु! इस सँसार में व्यापक रही है। हे प्रभु! तुम कितने व्यापक हो और मैं कितना अल्पज्ञता में रमण करता हूँ। प्रभु! मुझे यह प्रतीत नहीं है कि इससे आगे मुझे क्या भोजन प्राप्त होगा। परन्तु प्रभु! आप मेरे उस भोजन को भी जानते है जो आगे आने वाला भोजन मुझे मेरे प्राप्त होगा। उनमें जो अमृत मुझे प्राप्त होगा उसको भी आप स्वतः जानने वाले हैं, परन्तु मेरे लिए कोई मार्ग ऐसा नहीं, मेरे लिए कोई स्थान ऐसा नहीं, जहाँ प्रभु! मैं पाप कर्म करने के लिए उद्यत हो जाऊँ। प्रभु! वह कौनसा स्थान है जहाँ मैं पाप कर्म कर सकता हूँ। परन्तु प्रभु! पाप मैं उस काल में करता रहता हूँ, जब प्रभु! आपका जो आनन्दमयी श्रोत है वह मेरे से पृथक हो जाता है। मैं उस आनन्दमयी जो ज्ञान है, अमृतमयी जो पवित्रवत् है मैं उसको अपने से दूर नहीं चाहता। हे जगत् रचन् अस्वनम् । प्रभु मैं आपको बारम्बार नमस्कार कह रहा हूँ। आप मेरी इस प्रातः काल की नमः को स्वीकार करो क्योंकि आप उदार हैं, महान हैं, पवित्र हैं, शुद्ध हैं, आनन्दवत श्रोत हैं। हे प्रभु! इसलिए मैं आपको बारम्बार नमस्कार कर रहा हूँ।

पूज्यपाद गुरुदेव

अंक : 468 समग्र अंक : 543
वर्ष : 39 समग्र वर्ष : 46

अनुक्रम

क्रम संख्या	विषय		पृष्ठ
1.	प्रभु से विनय	पूज्यपाद गुरुदेव	1
2.	अनुक्रम		2
3.	याग	पूज्यपाद गुरुदेव	3-15
4.	याज्ञिक प्रेरणा	पूज्यपाद गुरुदेव	16-30
5.	याज्ञिक भगवान् कृष्ण	पूज्यपाद गुरुदेव	31-32
6.	भगवान राम और महर्षि लोमश	पूज्यपाद गुरुदेव	32
7.	विजयदशमी	पूज्यपाद गुरुदेव	33-34
8.	उद्बोधन	पूज्यपाद गुरुदेव	35-36
9.	दान, सूचना इत्यादि		37-40

पूज्यपाद गुरुदेव का जन्मोत्सव

परमपिता परमात्मा की असीम अनुकम्पा से पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज, आदि गुरु ब्रह्मा जी के परम प्रिय शिष्य का 69वां जन्मोत्सव दिनाँक **13 सितम्बर से 15 सितम्बर 2011** तक गुरुदेव की कर्मभूमि एवम् निर्माणीत यज्ञीय स्थली लाक्षागृह बरनावा में सामवेद ब्रह्म पारायण महायज्ञ के आयोजन द्वारा प्रति वर्ष की भाँति बड़े हर्षोल्लास के साथ गांधी धाम समिति (पंजी.) के द्वारा मनाया जा रहा है।

अतः आप सभी से नम्र निवेदन है कि योग निष्ठ गुरुदेव द्वारा पुनः से प्रज्वलित इस यज्ञ ज्योति को निरन्तर ऊर्ध्वा में ले जाने के लिये आप अपने परिवार, सगे-सम्बन्धी एवम् मित्रो सहित भाग लेकर आहुति प्रदान करें।

गाँधी धाम समिति (पंजी.)

प्राप्त न हों और अग्नि भी हमारे समीप न हो तो याग कैसे करे? उन्होंने कहा यदि तुम्हारे द्वारा न तो साकल्य है और न समिधा है, न अग्नि है मानों उस समय तुम याग करना चाहते हो तो जल को अंजलि में लो और जल को अंजलि में ले करके कहो प्राणाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा, समानाय स्वाहा, उदानाय स्वाहा कह करके हूत प्रारम्भ करो। उन्होंने कहा इस प्रकार आहुति देने का तुम्हें अधिकार प्राप्त होगा, अधिकारी बनों। तो मेरे प्यारे ब्रह्मचारी बड़े प्रसन्न हुए। उन्होंने कहा कि अंजलि में जल को ले करके क्योंकि जल तो संसार में पिण्ड का नेतृत्व करने वाला है जितना भी यह जल है मानों तेजोमयी को ले करके गमन करता है यह उत्पात बन जाता है। मेरे प्यारे देखो जल ही तो अमृत कहलाता है जो समुद्रो से जो पृथ्वी की मेखला बना हुआ है और समुद्र इसे अपने में चन्द्रमा अपने में धारण करके समुद्रों से अपना समनव्य करता है। वही माता के गर्भस्थल में बेटा देखो वह अंजालम भूतम ब्रह्मा जलप व्रते वही जल को ले करके बेटा माता अपने गर्भ में शिशु का निर्माण, निर्माणवेत्ता निर्माण करता है परन्तु माता उससे प्रसन्न होती है। तो बेटा! देखो वह जल को अंजलि में लेकर के स्वाहा उच्चारण करो।

ब्रह्माण्ड की कल्पना

मेरे प्यारे! देखो इतने में ब्रह्मचारी यज्ञदत ने कहा प्रभु! कहीं ऐसी स्थली पर चले जायें कि हमें कहीं जल भी प्राप्त न हो तो प्रभु हम याग कैसे करें? उन्होंने कहा यदि तुम्हें कहीं जल भी न प्राप्त हो तो तुम मानों देखों पृथ्वी की रज को लो और पृथ्वी की रज को ले करके तुम याज्ञिक बनो और पृथ्वी की रज के द्वारा कहो अमृतम ब्रह्मा देवतत्वम् ब्रह्मे प्राणाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा, उदानाय स्वाहा कह करके तुम हूत प्रारम्भ करो। मानों देखो यह पृथ्वी की रज के द्वारा यह पृथ्वी की रज और देखो तरलत्व जल प्राप्त हो करके मानों संसार में पिण्डों का निर्माण होता है, यह नाना प्रकार के जो पिण्डों

और याग करना उसका मानों एक कर्तव्य माना गया है। प्रत्येक मानव अपने में याज्ञिक बना हुआ है। मेरी प्यारी माता के गर्भ-स्थल में जब शिशु होता है तो वह अपने में याज्ञिक बन करके याग करती है और उसे नाना प्रकार की शिक्षा से सुशोभित कर देती है। इसी प्रकार मेरे प्यारे देखों प्रत्येक मानव, प्रत्येक प्राणी मात्र एक दूसरे का सहायक बना हुआ है। एक दूसरे में मानों एक दूसरे की आभा में निहित होने से एक प्रकार की यह यज्ञशाला है। इस प्रायः यज्ञशाला में प्रत्येक मानव अपने में याग कर रहा है। तो आओ मेरे प्यारे देखों यज्ञशाला में हम विद्यमान हो करके अपनी मानवीयता को अपने में विचारते रहें। परन्तु जहाँ वेद का मन्त्र यह कहता है कि यह संसार एक प्रकार की यज्ञशाला है वहीं परमात्मा ने इस मानव शरीर की रचना की और यह शरीर की रचना भी एक प्रकार की यज्ञशाला है। यहाँ बेटा देखों आत्मा ब्रह्मा है और पंचो मंगलम प्राणाय यह प्राणो में उदगाता, अध्वर्यु बने हुए हैं और मन इसको संचालित कर रहा है। वह इन्द्रियों का सारथी बन करके मानों देखो इस रथ को अपने में धारण करा रहा है। तो इस प्रकार बेटा देखो अलंकारिक वैदिकता में जब मानव अपने में विचारने लगता है तो बेटा उसका स्वरूप प्रायः उसके समीप आना प्रारम्भ हो जाता है। तो मेरे प्यारे देखो जहां इस प्रकार की वार्ताएं वैदिक-साहित्य में हमें प्राप्त होती हैं क्योंकि आचार्यों ने याग के ऊपर अपना अनुसन्धान किया है और इसके ऊपर उन्होंने गम्भीरता से अध्ययन करते हुए नाना प्रकार की प्रतिभा में मानव को ले गये हैं।

विद्यालयों में नैतिक-शिक्षा

तो आओ मुनिवरो! आज मैं तुम्हें एक ऋषि के आसन पर ले जाना चाहता हूँ जहां ऋषि-मुनि बेटा देखो अपने विद्यालयों में ब्रह्मचारियों को नैतिक-शिक्षा दे करके उनको शिक्षित बनाते हैं। मेरे प्यारे मुझे स्मरण आता रहता है महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज का यह वाक् मैने कई समय वर्णन किया है आज भी मुझे प्रायः स्मरण

आ रहा है। महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज अपने आसन पर विद्यमान, मेरे प्यारे प्रातः काल का समय है ब्रह्मचारी-जन एक पंक्ति में विद्यमान हैं और एक पंक्ति में विद्यमान हो करके ऋषि का आसन ऊर्ध्वा में गमन है। वह न्यौदा में कुछ वेद-मन्त्रों का अध्ययन करने लगे और न्यौदा में वेद-मन्त्रों का अध्ययन करते बोले हे ब्रह्मचारियों! तुम्हें मानों वेद-मन्त्र कहता है यज्ञनम यज्ञनम ब्रह्मा आक्रतम देवा। हे ब्रह्मचारियों! तुम याज्ञिक बनो मानों प्रत्येक मानव याज्ञिक बनें परन्तु याग करना चाहिए। मेरे प्यारे देखों इस प्रकार का जो उपदेश दे रहे थे ऋषिवर तो उन्होंने कहा अमृतम यज्ञनम ब्रहा यह विद्यालय एक प्रकार का यज्ञक्षेत्र है यहां प्रत्येक मानव, प्रत्येक ब्रह्मचारी अपने में याग और योग्यता के आधार पर अपने जीवन को महान बनाने के लिए उपस्थित हुआ है। इस प्रकार बेटा देखो जब याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने अपने वाक् प्रगट किए। प्रगट करने के पश्चात उनमें ब्रह्मचारियों में एक यज्ञदत नाम का ब्रह्मचारी उपस्थित हुआ और यज्ञदत ब्रह्मचारी ने कहा हे प्रभु! आप नित्यप्रति हमें याग का उपदेश देते हैं और सुकामना का उपदेश देते हैं परन्तु मेरा यह प्रश्न है क्या हम याग कैसे करें? तो महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा कि तुम मानों एक भव्य यज्ञशाला हो, नाना खम्बों वाली यज्ञशाला हो और उसमें मानों देखों वह सुन्दर रूप से सजातीय होनी चाहिए जैसे परमपिता-परमात्मा ने प्रकृति को आभूसित किया है और यह प्रकृति मानों देखो नाना प्रकार की वनस्पतियों से सजायित रहती है अपने में मानों देखो अपने-पन का गुण गान गाती रहती हैं। इसी प्रकार तुम मानों देखो यज्ञशाला को सुशोभनीय बनाओं। तो उन्होंने कहा प्रभु! यज्ञनम ब्रह्मा और यज्ञशाला में नाना प्रकार का साकल्य होना चाहिए और यज्ञशाला भव्य रूपों से उसका सुगठितता में मानों शिल्पकारों के द्वारा शिल्पकार उसे अपने में धारण करते रहें। इस प्रकार मुनिवरो देखो ऋषि ने वर्णन किया और यह कहा कि यज्ञमान अपने में स्वाहा कहता हुआ मानों नाना प्रकार के साकल्य को ले करके स्वाहा उच्चारण करे। मेरे पुत्रो उन्होंने

कहा कि **यज्ञशाला में ऊर्ध्वा आसन होना चाहिए उसमें ब्रह्मा हो, उदगाता हो, अध्युर्व हो,** यज्ञमान विद्यमान हो करके अपने स्वामीत्व का अपने में धारण करने वाला हो।

अग्न्याधान

मेरे प्यारे! देखो जब ऋषि ने इस प्रकार वर्णन किया उसका व्यवधान किया तो यज्ञदत ब्रह्मचारी बोले कि प्रभु मानों देखो कहीं ऐसा हो, न तो यज्ञशाला हो और न मानों देखो वह शिल्पकारों से निर्माणित हो और ना साकल्य हो और हम याग करना चाहते हैं तो प्रभु कैसे करे? तो याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने एक वेद का मन्त्र उच्चारण किया और उन्होंने कहा अग्नम ब्रह्मा अग्नि व्रतम देवस्सुइ तमन ब्रह्मा समिधनम् वृति देवाः वह मेरे प्यारे याज्ञवल्क्य मुनि बोले हे ब्रह्मचारियों यदि तुम्हारी यज्ञशाला नहीं है खम्बो वाली तो तुम मानों देखो अग्न्याधान करो और अग्नि को समिधा के द्वारा प्रदीप्त करके तुम याग करो और उसमें कहो प्राणाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा, समानाय स्वाहा, उदानाय स्वाहा कह करके हूत प्रारम्भ करो। मानों देखो वही तो हमारा यज्ञोमयी स्वरूप कहा जाता है वही तो एक आभा में निहित रहने वाला एक कृत है। तो मेरे प्यारे देखो इस प्रकार जब ऋषि ने वर्णन किया, ऋषि ने कहा है सम्भवम ब्रह्मा मानों देखो इस प्रकार तुम अग्नि के द्वारा समिधाओं को प्रदीप्त करके तुम याग करो। अग्नि तुम्हारी प्रचण्ड है क्योंकि अग्नि देवताओं का मुख है और अग्नि ही मानों देखो देवत्व को प्राप्त कराने वाली है। तुम अग्नि को अपना देवताओं का मुख स्वीकार करके उसको स्वीकार करो और मानों उसमें कहो कि प्रणाम ब्रह्मा प्रणाम रूद्रो भावा प्रव्हा इस प्राण की महिमा का गुण-गान गाते रहो।

आहुति देने का अधिकार

मेरे प्यारे देखो जब ऋषि ने इस प्रकार वर्णन किया उन्होंने कहा कहीं प्रभु ऐसा हो हम ऐसी स्थली में चले जाए कहीं हमें समिधा भी

तो वेद का ऋषि वेद-मन्त्र कहता है यज्ञनम ब्रह्मा यज्ञनम दिव्यम् व्रतम देवा **हे मानव तू याज्ञिक बन** और तू अपने में याग करने वाला बन क्योंकि परमात्मा ने यह जो ब्रह्माण्ड, यह जो पिण्ड है यह एक प्रकार की यज्ञशाला के रूप में इसका निर्माण किया है और निर्माणशाला में विद्यमान हो करके अपने में महान बन। तो बेटा! कहीं से मुझे यह प्रेरणा मिली, क्या तुम याग के ऊपर अपना विचार दो तो बेटा याग के ऊपर हमारे ऋषि-मुनियों ने बहुत अन्वेषण किया और यह विचारा कि याग अपने में कितना अद्वितीय क्रियाकलाप है। जिस क्रियाकलाप को ले करके हमारे यहां सृष्टि के प्रारम्भ से और वर्तमान के काल तक मानों इसका व्यवधान चला आ रहा है। यह सृष्टि के प्रारम्भ से और सृष्टि की अन्तिम प्रक्रिया तक याग अपने में याग बना रहेगा। इस प्रकार मेरे प्यारे! वेद का मन्त्र अपने में उद्गीत गा रहा है और आचार्यों ने इसका वर्णन किया है। अब मुनिवरो देखो मेरे प्यारे महानन्द जी दो शब्द उच्चारण करेंगे।

पूज्य महर्षि महानन्द जी के उद्गार

ओ३म् देवाम् भूतम् भविवर्णश्चमं वाचन्नमः

मेरे पूज्यपाद गुरूदेव अथवा मेरे भद्र ऋषि-मण्डल अभी-अभी मेरे पूज्यपाद-गुरूदेव अपने उद्गार दे रहे थे और वह गागर में सागर की कल्पना कर रहे थे अथवा उसको भरण कर रहे थे। तो विचार आ रहा था कि मैं अब क्या उच्चारण करूँ परन्तु जहाँ हमारी यह वाणी जा रही है वहां एक याग सम्पन्न हुआ है और **मेरा जो अन्तर्आत्मा है वह यज्ञमान के साथ रहता है।** हे यज्ञमान! तेरे गृह में जो द्रव्य वरणन्तु यज्ञे असुतः है तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे और तेरे गृह में द्रव्य का सदुपयोग होता रहे क्योंकि **द्रव्य का सदुपयोग होना ही मानवीयता कहलाती है।** जिन गृहों में देखो द्रव्यों का दुरूपयोग होता है वह गृह नारकिक बन जाते हैं और जिन गृहों में

का निर्माण होता है। कहीं माता के गर्भ-स्थल में देखो हम जैसे शिशुओं का निर्माण होता है और वह मानों पिण्ड के रूप में होता है। कहीं मुनिवरो देखों नाना प्रकार के ग्रहों का निर्माण होता है उस ग्रह के निर्माण में भी मेरे प्यारे देखों जल और गुरूत्व अथवा पृथ्वी के परमाणुओं का सब का मिलन होता है और मिलन हो करके मुनिवरो देखो पिण्डों का निर्माण होता है। माता के गर्भस्थल में जब मानव शरीर का, पिण्ड का, निर्माण होता है तो बेटा बहत्तर करोड़ बहत्तर लाख दस हजार दो सौ दो नाड़ियों का निर्माण होता है। मानों देखो यह जितना भी पिण्ड है चाहे वह लोक-लोकान्तरों के रूप में क्यों न हो चाहे वह माता के गर्भस्थल में शिशु के रूप में हो यह सर्वत्र मानों देखो एक पिण्डाकार बना हुआ है और पिण्डाकार बनने से ही मानों देखो पिण्डम ब्रह्मा अव्रतम यह पिण्ड ही मानों देखो ब्रह्माण्ड की कल्पना का एक क्षेत्र माना गया है। तो विचार आता रहता है, ऋषि कहता है हे ब्रह्मचारियों तुम आओ और मानों देखो यदि तुम्हें कोई वस्तु न प्राप्त हो तो पृथ्वी की रज को लो और कहो कि प्राणाय स्वाहा। यदि प्राण में पृथ्वी के गुरूत्व परमाणु नहीं होंगे तो प्राण अपनी क्रिया नहीं कर सकता, मन अपनी विभाजन क्रिया नहीं कर सकता। इसी प्रकार तुम गुरूत्व देखो जितना विज्ञान है संसार का वह तेजोमयी और तरलत्व देखो गुरूत्व परमाणुओं के ऊपर निहित रहता है। यही तीन प्रकार के परमाणु अपने में गतिवान रहते हैं चाहे वह लोक-लोकान्तरों में रमण करने वाला हो चाहे मेरे प्यारे अपने में अपनी आभा में परणित होने वाला हो। इसी प्रकार देखो जितने भी लोक-लोकान्तरों के पिण्डाकार बने हुए हैं चाहे वह सूर्य है, चाहे वह मंगल है, चाहे वह मानों देखो बुद्ध, शुक्र है कोई भी मण्डल हो मानों देखो मण्डलों का जो निर्माण हो रहा है वह केवल देखो इसी गुरूत्व और तरलत्व को, तेजोमयी को ले करके निर्माणीत हो रहा है। यह पिण्डों का निर्माण का निर्माण-दाता है यह मानों देखो पिण्डों का जन्मदाता है इसके ऊपर प्रायः हमें अपने में विचार-विनिमय करना चाहिए।

मेरे प्यारे! देखो इस प्रकार का जब विचार वैदिक-आचार्यों ने अपना मन्तव्य दिया तो मुनिवरो देखो ऋषि कहता है हे ब्रह्मचारी! तुम मानों इस प्रकार के गुरूत्व माता के गर्भ से ले करके और युवा तक मानों देखो इसी की कल्पना करते रहो और विचारते रहो। तो मानों तुम्हें एक पिण्डाकार जगत दृष्टिपात आता रहेगा। यह पिण्डाकार वाला जो जगत है यही मानों देखो परमात्मा का एक अनुमोदन कर रहा है चित्रण कर रहा है। जिस चित्रण को ले करके अपने जीवन को ऊँचा बनाया जाता है। तो आओ मेरे प्यारे देखो आज का हमारा वेद का मन्त्र हमें यह उद्गीत गा रहा है क्या मंगलम ब्रह्मा व्रतम देवा हे ब्रह्मचारी तुम मानों देखो गुरुत्व को ले करके पृथ्वी के परमाणओं को ले करके कहों प्राणाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा, उदानाय स्वाहा कह करके तुम हूत प्रारम्भ करो।

मन्त्र-द्रष्टा

मेरे प्यारे! देखो जब ऋषि ने इस प्रकार वर्णन किया तो यज्ञदत ब्रह्मचारी उपस्थित हो करके बोले हे प्रभु! कहीं ऐसा हो कहीं भगवन् हमें रज भी प्राप्त न हो तो हम याग कैसे करें? तो मुनिवरो देखो ऋषि ने कहा कि तुम एकन्त स्थली में विद्यमान हो जाओ और मन-कर्म-वचन को एकाग्र करते हुए, मन-मस्तिष्क को एकाग्र करते हुए मानों देखो तुम कहो वेद-मन्त्र का उद्गीत होना चाहिए-प्राणम ब्रह्मा वृतम प्राणो वर्णनम् ब्रहे। मेरे प्यारे प्रत्येक मानव को याग करना चाहिए और वह शान्त मुद्रा में विद्यमान है परन्तु मुद्रा में विद्यमान हो करके वह याग कर रहा है और वेद-मन्त्रों का उद्गीत गा रहा है। वेद-मन्त्रों का उद्गीत गाता हुआ अपने में याग कर रहा है तो वह याग अपने में याज्ञिक बना हुआ है। तो विचार आता है बेटा! न तो साकल्य है, न पृथ्वी की रज है तो उस समय तुम्हारे मुखार-बिन्दु में वेद-मन्त्रों की ध्वनि होनी चाहिए इसी ध्वनि को अपने में ध्वनिवान हो करके मुनिवरो देखो अपने में ध्वनियों में ध्वनित होता रहा है और वही ध्वनि मुनिवरो

देखो हमारे मन-मस्तिष्को की आभा बन करके और वह हमारे देखो मस्तिष्क में एक **अनहद ध्वनि** बन करके रहती है। तो विचार आता रहता है कि वेद-मन्त्र तुम्हारे समीप है और कहते है उच्चारण करते हुए प्राणाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा वेद-मन्त्रों का उद्गीत गाते रहो जिससे तुम्हारे हृदय में एक उज्जवलता का जन्म हो जाता है और वेद-मन्त्रों का तुम्हें ज्ञान होने लगता है और वेद-मन्त्रों के तुम द्रष्टा बन जाओगे। मेरे प्यारे! देखो वेद-मन्त्रों का जो द्रष्टा होता है, मन्त्र द्रष्टा, वेद द्रष्टता नाना प्रकार की दृष्टियों से अपने को जानने के लिए तत्पर हो जाओ। तो बेटा देखो वह याज्ञिक बना हुआ है। हमारे यहां याग का बड़ा वर्णन आ रहा है, याग का अपना बड़ा महत्त्व माना गया है। तो आओ मेरे प्यारे मैं विशेष चर्चा तुम्हें प्रगट करने नहीं आया हूँ विचार-विनिमय केवल यह कि हम परमपिता-परमात्मा के यज्ञोमयी स्वरूप को जानने का प्रयास करें।

आत्मा का लोक

तो बेटा! देखो याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने ब्रह्मचारियो से कहा तो ब्रह्मचारी यज्ञदत ऋषि के चरणो में ओत-प्रोत हो गये और यह कहा कि प्रभु आपको धन्य है आपने हमारे अज्ञान को समाप्त किया है। उन्होंने कहा है कि माता के गर्भ-स्थल में जो पिण्ड का निर्माण होता है वह **आत्मा का लोक** है परन्तु बाह्य-जगत में आ करके मानों अपने शरीर का लोक बना लेता है और वही मुनिवरो देखो जैसे आत्मा का शरीर सूक्ष्म शरीर कहलाता है इसी प्रकार मुनिवरो देखो इस ब्रह्माण्डम ब्रह्मा इस अमृतम ब्रह्मे यह माता का अवृत देखो पन्च-महाभूतों का लोक है जो पिण्डो के रूप में परणित होने लगता है। तो विचार आता रहता है बेटा इस प्रकार जब महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने ब्रह्मचारियो को अपना मन्तव्य दिया तो ब्रह्मचारी अपने में बड़े प्रसन्न हो गये और यज्ञदत ब्रह्मचारी उनके चरणो में ओत-प्रोत हो गये और यह कहा कि धन्य है प्रभु! आपने हमें प्रकाश में पहुँचाया है आपने हमारे अन्धकार को समाप्त किया है।

विद्यालयों में उनका संगठन होना चाहिए। विद्यालय ही तो ऊँचा बनाते हैं वहां निर्माण होता है, वर्ण व्यवस्था का निर्माण विद्यालयों में प्रायः होता रहा है। तो आज का वाक् यह क्या कह रहा है कि परमपिता-परमात्मा की आराधना करते हुए और हम मानों देखो रूढ़िवाद को नष्ट करें और राजा के राष्ट्र में देखो निर्वाचन की प्रणाली पवित्र हो। तो यह आज का वाक् अब सम्पन्न होने जा रहा है।

आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्रायः यह कि **प्रत्येक मानव को याज्ञिक बनना चाहिए, याग करना चाहिए। साकल्य न हो तो वह समिधा के द्वारा, समिधा न हो तो वह अंजलि में जल के द्वारा, जल न हो तो वह मानों देखो अपने में पृथ्वी की रज के द्वारा, रज भी न हो तो एकन्त स्थली पर विद्यमान हो करके वेद-मन्त्रो का उद्गीत गाता रहे जिसमें वायु मण्डल पवित्र बन जाए।** तो आज का वाक् अब यह सम्पन्न होने जा रहा है। आज के वाक् उच्चारण करने का हमारा अभिप्रायः यह क्या विद्यालयों में आचार्य इस प्रकार की नैतिक-शिक्षा देने वाले हों और न ब्रह्मऽपाना ब्रहे पान करने वाला अपने में देखो ऊर्ध्वा को प्राप्त हो जाएँ यह है बेटा! आज का वाक् अब समय मिलेगा तो मैं शेष चर्चाए कल प्रगट करूंगा। आज का वाक् समाप्त अब वेदों का पठन पाठन।

ओइम् देवा आभ्याम् मनु रथम आप्याः रथाः

शेष अनुपलब्ध

अच्छा भगवन्! आज्ञा।

दिनाँक : 11 जून, 1992
समयः प्रातः 10 बजे।
स्थान : चौ. लहरी सिंह
कसेरवा खुर्द, मुजफ्फरनगर।

❑❑

द्रव्यो का सदुपयोग होता है वह गृह **स्वर्ग** बन जाते हैं। मेरे पूज्यपाद-गुरूदेव ने अभी-अभी गागर में सागर की कल्पना की उन्होंने याग के ऊपर अपना कितना उद्गार दिया है और ऋषि-मुनियों का अपना-अपना जो विचार है वह भी उन्होंने प्रगट किया। तो आज मैं विशेष चर्चा न देता हुआ केवल यह कि हे यज्ञमान तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे और तेरे गृह में द्रव्य का सदुपयोग होता रहे ऐसी मेरी कामना रहती है।

राजा का कर्तव्य

परन्तु देखो यहां आधुनिक काल में या राष्ट्रवाद में मैं जाना नहीं चाहता हूँ क्योंकि राष्ट्रवाद अपने में कोई अद्वितीय क्रियाकलाप नहीं है। विचार आता रहता है कि राष्ट्र अपनी प्रजा और मानवीयता के सम्बन्ध में कोई चिन्तन नहीं कर रहा है कोई मनन नहीं कर रहा है। शिक्षा-प्रणाली, उसका जो अपना मानवीय जीवन है वह मानों देखो वह द्वितीय रूप में चला गया है। राजा को चाहिए यदि अपने राष्ट्र को ऊँचा बनाना चाहता है तो राजा को चाहिए कि राजा देखो राजा के राष्ट्र में रूढ़ि नहीं रहनी चाहिए। मैं अपने पूज्यपाद-गुरूदेव से यह उच्चारण करता चला आया हूँ क्या राजा को ऊँचा बनना है तो रूढ़ि नहीं होनी चाहिए। जब ईश्वर के नाम पर नाना प्रकार की रूढ़ियाँ बन जाती हैं वह एक दूसरे के रक्त के पिपासी बन जाती हैं, वह रक्त की पिपासी रूढ़ि देखो राष्ट्र का विनाश कर देती हैं, समाज की मानवीयता नष्ट हो जाती है। तो इसी प्रकार राजा को चाहिए यदि वह अपने राष्ट्र को ऊँचा बनाना चाहता है तो प्रत्येक रूढ़ियों के आचार्यों को एकत्रित करे और उनका विचार-विनिमय शास्त्रार्थ के तर्क के आधार पर होना चाहिए और होने के पश्चात मानों देखो उसकी प्रतिभा देखो वह निर्णायक राजा होना चाहिए। वह अपना निर्णय देने वाला हो, और राजा देखो वेदों के मर्म को जानने वाला हो, ज्ञानी हो और कर्मकाण्डी होना चाहिए। राजा यदि ज्ञानी है और कर्म काण्डी है

तो वह राजा अपने राष्ट्र को ऊँचा बना सकता है। तो विचार आता है प्रत्येक रूढ़ियों के आचार्यों का शास्त्रार्थ हो और राजा जो तर्क और विज्ञान पर जो स्थिर हो जाए उसी विचारों को स्वीकार करके अपने राष्ट्र को ऊँचा बनाए। यह राजा का कर्तव्य है। राजा के राष्ट्र में यदि रूढ़ियाँ पनपती रहेगीं तो राजा का राष्ट्र कदापि ऊँचा नहीं बनेगा। यहाँ नाना प्रकार की रूढ़ियों के आचार्यों को एकत्रित करके उनका विचार-विनिमय होना चाहिए। मेरा यह सदैव मन्तव्य रहा है कि एक ही विचार हो, एक ही मानों एक ही कर्तव्यवादी राजा के राष्ट्र में प्रजा होनी चाहिए एक ही प्रकार का ईश्वर के नाम पर क्रियाकलाप होना चाहिए जब मुनिवरो देखो यह राष्ट्र और समाज ऊँचा बनता है। **राष्ट्र और समाज में नैतिकता की और मानवता की आवश्यकता रहती है।** जब देखो राजा सुरा और सुन्दरी और द्रव्य का लोलुप्तवादी बन जाता है तो समाज का ह्रास होना प्रारम्भ हो जाता है, शिक्षा-प्रणाली देखो ह्रासता में चली जाती है और वह ह्रास होना ही समाज के लिए हानि-प्रद कहलाता है तो इसीलिए राजा को चाहिए कि अपने राष्ट्र को ऊँचा बनाए। आज मैं विशेष चर्चा प्रगट नहीं करूँगा केवल यह क्या हे राजन तेरे राष्ट्र में रूढि ईश्वर के नाम पर नहीं होनी चाहिए, तेरे राष्ट्र में मानवता होनी चाहिए, कर्तव्यवाद होना चाहिए और वैदिक-मर्म का जानने वाले देखो पाण्डित्व तेरे राष्ट्र में होने चाहिए जिससे गृह ऊँचा बने मानवीयता तेरे जीवन में आ जाए तेरा इन्द्रियो पर जय होना चाहिए।

अमृतम ब्रह्मा देखो मेरे पूज्यपाद-गुरूदेव ने अभी-अभी गागर में सागर की कल्पना की है। मैं केवल एक अपनी वेदना राष्ट्र के प्रति देता रहता हूँ। तो आज मैं विशेष चर्चा न देता हुआ केवल यही कि राजा के राष्ट्र में रूढ़ि नहीं रहनी चाहिए क्या यह मोहम्मद के मानने वाला है, यह ईशु के मानने वाला है यह कला मुक्ता को देखो मानने वाला है, धर्म एक होना चाहिए, पद्धति एक होनी चाहिए वह परमात्मा

के नामों पर विभाजन नहीं होना चाहिए। परमात्मा के नाम जब विभाजन होता है, तो समाज में विकृतता आ जाती है, समाज में रक्त भरी क्रांति के अवशेष बने रहते हैं। तो इसलिए मेरा यह एक वाक् कहता है कि अमृतम हे राजा तू अपने राष्ट्र को ऊँचा बना। तो ऐसा उपदेश दे करके मैं अपने विचारो को विराम दूँगा। क्योंकि राजा ब्रह्मवेत्ता हो, वेदज्ञ हो जिससे वह अपनी प्रजा के भाव को जान सके और प्रजा के विचारों को जान करके उसी एक ही विचारधारा वाला व्यक्तित्व होना चाहिए।

अब मैं अपने पूज्यपाद-गुरुदेव से आज्ञा पाने से पूर्व कि **हे यज्ञमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे और तेरे गृह में द्रव्य का सदुपयोग होता रहे,** जिस गृह में द्रव्य का सदुपयोग होता है वह गृह, वह द्रव्य उस गृह को नहीं त्यागता और गृह द्रव्य को नहीं त्यागता। इसी प्रकार जहां दुरूपयोग होता है एक समय वह होता है कि मानव के जीवन का साथी द्रव्य न रह करके वह उसे हीन बना देता है हीनता को प्राप्त करा देता है। तो यह आज का वाक् मैं अपने पूज्यपाद अमृतम भुवम् ब्रह्मे अमृतम पूज्यपाद-गुरूदेव से आज्ञा पाऊँगा।

पूज्यपाद-गुरुदेव

मेरे प्यारे ऋषिवर! अभी-अभी मेरे प्यारे महानन्द जी ने अपने राष्ट्रीय उद्गार दिये क्या राष्ट्र कैसा होना चाहिए। राजा के राष्ट्र में रूढि नहीं होनी चाहिए। ईश्वर के नाम की जो रूढ़ियाँ हैं यह समाज का विनाश करती रहती हैं तो यह रूढ़ियाँ समाप्त हो, राजा का राष्ट्र पवित्र हो और मानवता का प्रसार होना चाहिए। तो यह आज का वाक् मानों देखो मैं अपनम ब्रह्मे आज का विचार यह चल रहा था कि प्रत्येक मानव को अपने में याग करना चाहिए वेद के मन्त्रो के द्वारा उद्गीत गा करके। तुम मानों देखो जैसा याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने ब्रह्मचारियो को उपदेश दिया और आदेश दिया उसी के अनुसार समाज और

महर्षि याज्ञवल्क्य जी द्वारा नैतिक वाद की शिक्षा

तो आओ मेरे प्यारे! इस विशेष वाक्म ब्रह्मा व्रतम् इन वाक्यो में न जाता हुआ केवल यह कि आओ बेटा! तुम्हें मैं याज्ञवल्क्य मुनि महाराज के विद्यालय की चर्चा मैं बारम्बार प्रगट करता रहता हूँ। मेरे प्यारे! देखो प्रातःकालीन महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज अपने विद्यालय में विद्यमान हो करके ब्रह्मचारियों के मध्य में यह उपदेश दे रहे थे हे ब्रह्मचारियो! विद्यालय का सबसे प्रथम यह कर्तव्य है क्या ब्रह्मचारियो को नैतिकवाद आना चाहिए। उन्हें अपनी इन्द्रियों का और अपने कर्तव्य का ज्ञान होना चाहिए। जब तक ब्रह्मचारी को आचार्य कर्तव्यवेत्ता नहीं बनाता, कर्तव्य का ज्ञान नहीं देता है उसको क्रियात्मक आचार्य और ब्रह्मचारी दोनो नहीं होंगे तो विद्यालय कदापि भी पवित्र नहीं बन पायेंगे। यह विद्यालय एक प्रकार की यज्ञशाला है जहाँ शिक्षा, शिक्षा में प्रणेः शिक्षाशाला है वहीं बेटा! देखो यह यज्ञशाला है **यज्ञशाला का अभिप्रायः है कि जहाँ हम एक दूसरे में विचार का समन्वय करते हुए, वेद-मन्त्रो का उद्गीत गाते हुए हम विचारों का एक याग करते हैं तो उसको बेटा! देखो हमारे यहाँ यज्ञशाला कहा जाता है।** जैसा मुझे स्मरण आता रहता है महर्षि भारद्वाज मुनि के विद्यालय में मानो देखो ब्रह्मचारी अपने में विद्यमान हैं और ब्रह्मचारी एक-एक वेदमन्त्र का उद्गीत गा करके उसके ऊपर अनुसन्धान कर रहे हैं अथवा विचार-विनिमय हो रहा है और वह मुनिवरो देखो उसी विचार को ला करके अपनी आभा में परणित कर देते हैं। तो विचार आता रहता है कि वह यज्ञशाला है और यज्ञशाला में विद्यमान हो करके ब्रह्मचारी अपने मानवीय जीवन को और मानवीय और बाह्य जीवन, दोनों को ऊर्ध्वा बनाने का प्रयास करते रहे हैं।

याज्ञिक बनने की प्रेरणा

इसी प्रकार याज्ञवल्क्य मुनि महाराज के विद्यालय में मेरे प्यारे! देखो नाना प्रकार के यागो का अवधान होता रहता था। मुझे स्मरण आता रहा है उनके यहाँ प्रातःकालीन **ब्रह्म-याग** होता रहता। आचार्य मध्य में विद्यमान है और ब्रह्म का चिन्तन कराना और ब्रह्म में उनको ले जाना बेटा! देखो

।। ओ३म्।।

याज्ञिक प्रेरणा

जीते रहो!

देखो मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेद-मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। यह भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा आज हमनें पूर्व से जिन वेद-मन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस परमपिता-परमात्मा जो यज्ञोमयी स्वरूप है याग उसका आयतन है, उसका गृह है, उसका सदन है और यह प्रायः उसी में वास कर रहा है। तो उस परमपिता-परमात्मा जो यज्ञोमयी स्वरूप है जो यागों में व्याप्त रहने वाला है हम प्रायः उस परमपिता-परमात्मा की महिमा का गुणगान गा रहे थे। क्योंकि प्रत्येक वेद-मन्त्रों में उस परमपिता-परमात्मा के यज्ञोमयी स्वरूप का वर्णन होता रहा है। क्योंकि मानव परमपरागतों से ही भिन्न-भिन्न प्रकार की उड़ाने अपने में उड़ता रहा है। परन्तु यागों के ऊपर भी आचार्यों ने अपनी एकन्त स्थलियों पर विद्यमान हो करके और उसके ऊपर उन्होंने अन्वेषण किया, अनुसन्धान किया और इस संसार को उन्होंने यज्ञमयी वेदी का स्वरूप देते हुए यह वर्णन किया है कि यह परमपिता-परमात्मा का जो ब्रह्माण्ड है यह एक प्रकार की यज्ञवेदी है। जिसके ऊपर मानव विराजमान हो करके, प्रत्येक मानव अपने में याज्ञिक बना हुआ है। **जितना भी सुक्रियाकलाप है, सुकर्म है उस सर्वत्र का नाम एक यज्ञमयी रूप माना गया है।** जैसे मेरी प्यारी माता अपने पुत्र को, अपने बाल्यों को शिक्षा देती रहती है और वह अपने गर्भस्थल से ले करके पाँच वर्ष की आयु तक वह अपना उपदेश और अपनी सुभावना उसे मानो वृत्तियों में रत्त करती रहती है। श्रोत्रों में शब्दो के द्वारा वह अपने में ग्रहण करता रहा है। तो मुनिवरों! देखो वह माता याग कर रही है। देखो आचार्य अपने विद्यालय में विद्यमान हो करके वह मानो उद्गीत गा रहा है ब्रह्मचारियों

के मध्य में और ब्रह्मचारियों से कहता है हे ब्रह्मचारी! आओ तुम याज्ञिक बन करके अपने में, यागो में प्रवेश हो जाओ। तो मानो देखो अपने में याज्ञिक बन जाते हैं और बन करके मुनिवरो! देखो यजनम ब्रह्मा वर्णास्सुताः तो नाना ब्रह्मचारी भी इससे प्रश्न करते रहते हैं।

याग की व्याख्या

मैने कई कालो में तुम्हें चर्चा करते हुए कहा है क्या याज्ञवल्क्य मुनि महाराज के विद्यालय में नाना प्रकार की चर्चाएँ होती रही हैं उन्होंने जब याग के ऊपर अपनी नैतिक शिक्षा देते हुए ब्रह्मचारियों के मध्य में यह कहा कि हे ब्रह्मचारियों! **यह जो याग है यह तुम्हारा वसु है** और इस वसु में मानो तुम बसते हो जिस वसु में तुम बसते हो उसका नाम याग है। तो जितना भी सुक्रियाकलाप है संसार में सर्वत्र मानो वह याग के रूप में परणित होता रहा है। क्योंकि उन्होंने अपनी विचार धाराऐ और कल्पना करते हुए कहा कि **परमपिता-परमात्मा का यह जो अनूठा जगत है यह एक प्रकार की यज्ञशाला है और यज्ञशाला में विद्यमान हो करके प्रत्येक मानव अपने में याज्ञिक बना हुआ है।** मानो उन्होंने ऊर्ध्वा में कल्पना करते हुए कहा है क्या अमृतम् ब्रह्मा अमृतम् देवाः अमृतम् दिव्यम् ब्रहो वर्णस्सुति देवाः मानो यह जो परमपिता-परमात्मा का ज्ञान है अथवा यज्ञोमयी जो एक धारा है वह अमृत है। हे मानव! तू उस अमृत को अपने में ग्रहण करता चल। अमृत को अपने में लाता हुआ, अमृतमयी बनाता हुआ अपने जीवन को अमृतमयी धारावाला बना करके और अमृत को प्राप्त करने वाला बन। तो मेरे पुत्रो! देखो इस प्रकार की अपने में कल्पना करते हुए आचार्यों ने यह कहा कि जो यह संसार रूपी यज्ञशाला है जिसके ऊपर मानव ने ऊर्ध्वा में कल्पना की है और कल्पना करते उन्होंने कहा कि यह संसार एक प्रकार की यज्ञशाला है और **इस यज्ञशाला में स्वयं ब्रह्मा मानो यज्ञशाला के ब्रह्मा हैं और आत्मा यजमान है।** आत्मा यजमान होने से मानो वह अपने में याग हो रहा है और यह पँच-महाभूत यज्ञशाला के कोई इनमें

से होता है, कोई उद्गाता है, कोई अध्वर्यु है और वह कोई पुरोहित बन करके बेटा! इस संसार रूपी याग का चलन हो रहा है और जिसमें मानव अपने में याग कर रहा है। यह परमात्मा का भव्य याग है। नाना प्रकार की वनस्पतियाँ, नाना प्रकार का यह जो क्रियाकलाप वनस्पतियों के रूप में जो सुगन्धित, पोष्टिकता मानव को प्रदान करता रहता है कोई खाद्य पदार्थों के द्वारा, कुछ खनिज पदार्थों के द्वारा। तो बेटा! यह परमात्मा का एक अनूठा जगत है जिसके ऊपर मानव परम्परागतों से अपने में विचार-विनिमय करता रहा है और यह विचारता रहा है कि यजनम् ब्रह्मा यजनम् ब्रहे क्रतम् यह परमात्मा मानो इस संसार रूपी यज्ञ का स्वतः स्वामी है और इसका नेतृत्व करने में इसका वह नियमन कर रहा है अथवा इसमें वह विद्यमान है।

तो आओ मेरे प्यारे! आज का हमारा वेद मन्त्र यही कह रहा है कि हम अपने में याज्ञिक बन करके और याग को अपने में सम्पन्नता के मार्ग पर ले जाए जिससे यह संसार मानो पवित्र और महान बनता है। तो मुनिवरो! विचार-विनिमय क्या अमृतम् आज का हमारा वेद मन्त्र बेटा! याग के ऊपर अपना उद्गीत गा रहा है और यह कह रहा है यजनम् ब्रह्मा अकृतम देवत्वाम् लोकाम् हे मानव! तू अपने में विचार-धारा को पवित्र बना जिससे तेरा मानवीयत्व पवित्रता की धारा पर ओत-प्रोत होता हुआ परमात्मा, ब्रह्मा को जान करके तू **ब्रह्म-सूत्रों** का पठन-पाठन करता अपने को ब्रह्म के निकट ले चल क्योंकि वह तुम्हारा कल्याणकारक है और कल्याण में ही अपनी मानो देखो उस मानव समाज को ले जाने वाला है। तो आओ बेटा! देखो आज का विचार-विनिमय क्या आज मैं इस सम्बन्ध में कोई विशेष चर्चा नहीं देने आया हूँ केवल इतना वेद मन्त्र कहता है यजनम् ब्रह्माऽप्रणम ब्रहे, वह जो परमात्मा है वह यज्ञोमयी स्वरूप है। हम उस परमपिता-परमात्मा के यज्ञोमयी स्वरूप का वर्णन करतें चले जाए और उसको यह संसार का स्वामीत्व मानो यह संसार रूपी यज्ञशाला है यह यज्ञशाला में विद्यमान हो करके हम सर्वत्र याग कर रहे है।

पृथ्वी मण्डल पर मानव जीवन को प्राप्त करता है और यदि मुनिवरो! देखो श्रोत्रों से जाता है तो अन्तरिक्ष में मानो देखो गमन करके वह पक्षी बन करके देखो जीवन को वह यापन करने लगता है। इसी प्रकार मुखारविन्द से जाता है तो मेरे प्यारे! देखो वह जलचरो में अपनी कृतियों को ले जाता है। इसी प्रकार उपस्थ के द्वारा जाता है तो मुनिवरो! देखो वह क्रीड़ा करने वाला प्राणी बनता है और इसका उपस्थ के द्वारा जाता है वह जलचरों में समुद्रों में रमण करने वाला है। तो इसी प्रकार हमें विचारना है, हमें वह कर्म करना है जिससे यह आत्मा सुद्वार से जाना चाहिए। जिससे बेटा! हम देवतापन को प्राप्त हो जाएँ। मेरे प्यारे! देखो जो योगीजन होते हैं, जो देखो आत्मा परमात्मा के ऊपर अन्वेषण करते हैं और उनके चित्त में कुछ संस्कार रह जाते हैं तो बेटा! देखो उनका आत्मा ब्रह्मरन्ध्र से जाता है। वह पुनः देखो पुणयवान बन करके वह मुनिवरो! देखो पुनः देखो द्वितीय जन्म में देखो वह अमृतम ब्रह्म-ज्ञान में लग जाते हैं वह उसी साधना में प्रवेश कर जाते हैं और जो मेरे प्यारे ब्रह्मणे देखो नासिका के वह सूर्य स्वरों से प्राण जाता है आत्मा के सहित बेटा! देखो वह मानव जीवन को प्राप्त करता है। तो आज मैं बेटा! इस सम्बन्ध में विशेष चर्चा नहीं केवल यह है कि दानम् ब्रह्मेः देखो मानव योनी परन्तु साधारण है। इसी प्रकार देखो यह नौ द्वारों को जानना और जान करके ही नौ द्वारों से बेटा! **देखो अपने जीवन में नौ द्वारों को पवित्र बनाने का नाम याग करना है।** इसको साधक जन करते हैं। यजमान वह आध्यात्मिकवाद में प्रवेश कर जाता है।

सप्त-ऋषि

मेरे प्यारे! देखो ऋषि ने नतमस्तिक हो करके कहा प्रभु! आपको धन्य है। हे प्रभु! मैं यह और जानना चाहता हूँ कि यजमान याग करना चाहता है कितने होता हों? तो उन्होंने बेटा नौ द्वारों को त्याग करके उन्होंने कहा सप्त होता होने चाहिए। बेटा! सप्त होता कौन से जो सप्त-ऋषि हैं और वह सातों ऋषि मानो उनमे कोई जमदग्नि है, कोई कश्यप है कोई विश्वामित्र है, कोई व्रीही है, कोई अत्रि है। तो बेटा! देखो इस प्रकार यह हमारे यहाँ

यह आचार्यों का कर्तव्य है, उसे ब्रह्म याग कहा जाता है। जहाँ ब्रह्म के ऊपर ब्रह्म की प्रतिभा का वर्णन होता रहा है अथवा उसकी शिष्टात्व व्रीहि अस्सुतम् मनुवाचप्प्रवेः मानो देखो कैसे-कैसे यह प्रकृति का अवधान हो रहा है कैसे यह जगत चल रहा है इसके ऊपर बेटा! वह अपना मन्तव्य देते रहे हैं। आचार्यजन जब यह उच्चारण करने लगे कि तुम याग करो तो उन्होंने बेटा! देखो भौतिक और आध्यात्मिकवाद को, दोनो को, उन्होंने कटिबद्ध किया है। दोनों अपने में बड़े विचित्रत्व में धारयामि बनते रहे हैं। तो बेटा! देखो जैसे वह याग का उपदेश दे रहे थे हे ब्रह्मचारियों! तुम याज्ञिक बनो और तुम याज्ञिक बन करके अपने शरीर रूपी यज्ञशाला को जानने का प्रयास करो। बेटा! उन्होंने अपना मन्तव्य देते हुए कहा क्या अमृतम् ब्रह्मा यजनम् ब्रहे तुम याज्ञिक बन करके वृत्तियों में प्राप्त हो जाओ।

याग के होता

तो बेटा! एक यज्ञदत्त ब्रह्मचारी और एक श्वेतकेतु ब्रह्मचारी दोनों उपस्थित हुए और उपस्थित हो करके यज्ञदत्त ने यह प्रश्न किया कि महाराज यह यजमान मेरे समीप है परन्तु यह याग करना चाहता है उस याग में कितने होता होने चाहिए? तो बेटा! यहाँ ऋषि ने आध्यात्मिक और भौतिकवाद दोनों को एक दूसरे में कटिबद्ध किया है, दोनों को एक दूसरे में उन्होंने मानो देखो इसमें प्रवेश किया है। उन्होंने कहा क्वङ्गलम ब्रहे वर्णस्सुतम् क्या हे प्रभु! यजमान याग करना चाहता है कितने होता होने चाहिए? तो वह कहते हैं कि यजमान याग करना चाहता है तो **चौबीस होताओं के द्वारा याग होना चाहिए।** उन्होंने चौबीस होताओं की गणना कराई दस प्राण हैं, दस इन्द्रिया हैं, मन और बुद्धि, चित्त और अहंकार मानो देखो ये चौबीस होता कहलाये जाते हैं और ये चौबीस होता ही मानो देखो ब्रह्माण्ड रूपी यज्ञशाला के मानो ये खम्बे हैं, यही मानव के जीवन के स्तम्भ माने गये हैं। मेरे प्यारे! देखो **प्राणाम्भूतम् ब्रह्म।** इस प्रकार देखो यजमान यदि याग करना चाहता है तो चौबीस होताओं के द्वारा याग करे। मानो देखो मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार इसके बहुत अवान्तर भेदन माने गये

हैं। इन भेदनों को ले करके बेटा! आध्यात्मिकवाद में प्रवेश करना है मानो देखो इसको हमारे यहाँ याज्ञिक कहा जाता है। यजमान से जब अम्ब्रहाम् देखो यजमान याग करना चाहता है तो चौबीस होताओं के द्वारा वह याग करने वाला बनें इन सबको सुसज्जित बनाए और इनके साकल्यों को एकत्रित करके विचार-विनिमय करता रहे।

सूक्ष्म-शरीर

तो मेरे प्यारे! देखो उन्होंने कहा प्रभु! यजमान याग करना चाहता है कितने होता होने चाहिए? तो ऋषि ने बेटा! सूक्ष्म शरीर को मापने का प्रयास किया। उन्होंने कहा कि यजमान याग करना चाहता है तो **सत्रह होताओं के द्वारा याग करे।** बेटा! जिसमें देखो दस प्राण हैं, पञ्च महाभूतों की वासनाए हैं और मन और बुद्धि हैं। यह मुनिवरों! देखो सत्रह होताओं का यह सूक्ष्म शरीर कहलाता है जिसको अग्रणीय बना करके मानो देखो इसको जानने का प्रयास करना चाहिए और जान करके मानो देखो **ज्ञान का साकल्य बना करके मुनिवरो देखो उसको हृदय में प्रवेश कर देना चाहिए। वह यजमान मानो देखो सर्वश्रेष्ठ होता है जो अपने में देखो सूक्ष्म शरीर के द्वारा अपने मानवीयत्व को जानने का प्रयास करता है,** संसार का सर्वत्र ज्ञान उसके समीप मानो सिमट जाता है। तो विचार आता रहता है याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने भौतिकवाद को बेटा! आध्यात्मिकवाद से उन्होंने समन्वय किया।

एकादशो

उन्होंने कहा प्रभु! यजमान याग करना चाहता है कितने होताओं के द्वारा याग हो? उन्होंने कहा यजमान याग करना चाहता है तो **ग्यारह होताओं के द्वारा याग होना चाहिए।** तो वह ग्यारह होता कौन से हैं बेटा! देखो दस इन्द्रियाँ हैं, ग्यारहवा मन कहलाता है। मानो एकादशो बन करके मेरे प्यारे! देखो एक रथ है और रथ में विद्यमान होने वाला आत्मा है वह मुनिवरों! देखो यह इन्द्रियाँ अश्व है और मन उसका सारथी माना गया है। जब सारथी

बन करके मुनिवरों! देखो आगे गमन करता है, कराता है, इन्द्रियों को सुमार्ग पर ले जाता है तो वह याग कर रहा है। प्रत्येक इन्द्रियाँ बेटा! याग में होनी चाहिए, प्रत्येक इन्द्रियाँ अपनी कर्मठता में मानो कर्मठ रहनी चाहिए जिससे मेरे प्यारे! देखो याग पवित्रता को प्राप्त हो जाए। यही होता कहलाते हैं और इन होताओं को एकाग्र करके जब यजमान याग करता है तो बेटा! यह जो मृत-लोक है इसको वह विजय कर लेता है और विजेता बन करके बेटा! अपने को महान बनाता है और वह कहता है विज्ञानम्भूतम्ब्रह्मे व्रातम्ब्राग्नि अस्सुताः। आओ देखो हम गृहपत्य नाम की अग्नि का पूजन करें और गृहपत्य नाम की अग्नि का पूजन इसलिए प्रजाम् ब्रव्हे प्रजाम् हम प्रजा को ऊँचा बनाते रहें। तो बेटा! देखो यजमान अपने में याग करता हैं तो ग्यारह इन्द्रियों के द्वारा मानो देखो जिसमें दस इन्द्रियाँ, ग्यारहवां मन है। इनको पवित्र बनाना बहुत अनिवार्य है और इनमें ज्ञान का भरण करना बहुत ही अवृत माना गया है, तो उसके द्वारा याग होना चाहिए।

नौ द्वार

मेरे प्यारे देखो इतने में यज्ञदत्त ब्रह्मचारी ने कहा हे प्रभु! यजमान याग करना चाहता है कितने होता होने चाहिए? **उन्होंने कहा नौ होताओं के द्वारा याग होना चाहिए।** बेटा! देखो इस मानव शरीर में मानो देखो नौ द्वार कहलाए जाते हैं और नौ द्वारों के नौ देवता माने गये हैं देखो उन नौ देवताओं को ऊँचा बनाना, नौ देवताओं को जानना और प्रत्येक द्वार पर मुनिवरो! देवता को स्वीकार करके और उसमें मानो सुन्दर साकल्य और स्थापित देखो **धर्म अम्ब्रहाः** उनको जान करके हृदय में प्रवेश करना चाहिए। तो विचार आता रहता है बेटा! नौ द्वार हैं दो नेत्रों के छिद्र हैं, दो नासिका के छिद्र हैं, दो श्रोत्रों के छिद्र हैं और उपस्थ और ग्रीवा मानो देखो एक मुखारविन्दम्ब्रहे यह नौ छिद्र कहलाते हैं यह नौ द्वार कहलाते हैं। जब आत्मा जाता है शरीर से तो इन्हीं द्वारों से हो करके जाता है। बेटा! यदि नेत्रों के छिद्रों से जाता है तो अग्निमयी शरीरों को धारण करता है और यदि वह मानो देखो ब्रह्मणं नासिका के द्वार से जाता है तो वह मुनिवरो! देखो

ने ब्रह्मचारियों को इस प्रकार नैतिकवाद दे करके वह अपने में मौन हो गये। तो बेटा! हमारा विचार-विनिमय क्या कि हम याज्ञिक बनें एक दूसरे से एक दूसरे में समावेशता को दृष्टिपात करते रहें। यह है बेटा! आज का वाक् अब मेरे प्यारे! महानन्द जी दो शब्द उच्चारण करेगें।

पूज्य महर्षि महानन्द जी के उद्गार

ओ3म् देवाम्भूतम्भवि वर्णस्वतम् देवाः वाचन्नमाः।

मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! मेरे भद्र ऋषि मण्डल। अभी-अभी मेरे पूज्यपाद गागर में सागर की कल्पना कर रहे थे और हमें ऐसा प्रतीत हो रहा था क्या **इस ज्ञान का कहीं छोर नहीं है।** वह इतना अनन्तमयी है परमात्मा का ज्ञान यह अनन्ततमयी माना गया है परन्तु मेरे पूज्यपाद गुरुदेव गागर में सागर की कल्पना कर रहे थे। आज मैं कोई विशेष चर्चा नहीं केवल यह कि जहाँ आज हमारी यह आकाशवाणी जा रही है वहाँ एक याग का आयोजन हुआ है और मैं यागाम् भूतम् ब्रह्मा क्योंकि यह जो वर्तमान का काल है यह एक बड़ा विचित्रकाल चल रहा है और ऐसे काल में मानो देखो द्रव्य का सदुपयोग होना, याग जैसे क्रियाकलापो का होना यह मानो देखो बड़े सौभाग्य का विषय माना गया है। मैं अपने यजमान! को क्या हे यजमान! मेरी शुभकामना सदैव तेरे साथ रहती है कि तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे और तेरे गृह में द्रव्य का सदुपयोग होता रहे। क्योंकि जिस गृह में द्रव्य का सदुपयोग होता है वह द्रव्य का स्वामी बन जाता है द्रव्य उसे नहीं त्यागता और जहाँ द्रव्य का दुरूपयोग होता है, सुरा और सुन्दरी में और द्रव्य में मानो जिसकी प्रवृत्ति चली गई वह वाम मार्गी कहलाता है। मानो जैसे सुरापान करने वाला देखो वह वाम मार्गी है। सुन्दरियों में रमण करने वाला भी वाम मार्गी है और द्रव्य का जो दुरुपयोग इस प्रकार करता रहता है वह देखो द्रव्य की पिपासा उसकी प्रबल हो गई है, इन्हीं कार्यों के लिए तो वह वाममार्गी कहलाता है। वाम मार्ग उसे कहते हैं जो

सप्त होता माने गये है। सप्तर्षि विद्यमान रहते हैं। वाणी को अत्रि कहते हैं, नेत्रो को किसी को विश्वामित्र, किसी को वशिष्ठ कहते हैं, किसी को कश्यप कहते हैं, तो किसी को जमदग्नि कहा जाता है। इसी प्रकार बेटा! देखो इन्द्रियों का क्रियाकलाप चल रहा है। यह होता हैं और **यह होता हृदय रूपी यज्ञशाला में याग करते हैं। मेरे प्यारे! देखो उन्होंने कहा सप्त होताओं के द्वारा याग होना चाहिए।** अत्रि इसलिए वाणी को कहते हैं यह अति आहार कर जाती है मानो यह संसार को निगल जाती है अपनी वाणी को **अत्रि तत्रमा** देखो वाणी के द्वारा तो इसे अत्रि कहा जाता है। मेरे प्यारे! मैं इस सम्बन्ध में कोई विशेष चर्चा या इसकी गम्भीरता या इसके गम्भीर रहस्यों में नहीं ले जा रहा हूँ केवल तुम्हें परिचय कराने के लिए आया हूँ।

पँच-महाभूत

जब यह पुनः ऋषि ने अपनी जब विवेचना की तो अमृतम् यज्ञदत्त ने कहा प्रभु! यजमान याग करना चाहता है कितने होता होने चाहिए? उन्होंने कहा **पञ्च होताओं के द्वारा याग होना चाहिए।** बेटा! पञ्च होताओं में मानो पञ्च-महाभूत हैं और वह पञ्च-महाभूतों में मानो देखो अग्नि है, जल है, और वायु है, अन्तरिक्ष है और मुनिवरो! देखो गुरुत्व पृथ्वी है। इनको जानना और जान करके मानो देखो इनका साकल्य बना करके हूत बनाना यह मानो देखो हूत करने का नाम याग माना गया है। इसको ऋषिजन जब करते हैं तो बेटा! पञ्च-महाभूतों के मण्डल को जान करके बेटा! उसमें विजेता को प्राप्त करते हैं। आज मैं इस सम्बन्ध में भी चर्चा नहीं दूँगा केवल यह कि हम पञ्च-होताओं के द्वारा याग करें और पन्चमम् ब्रह्मे देखो उनको एकाग्र करके हृदय में प्रवेश कराके हृदय से परमात्मा का, हृदय का समन्वय होना चाहिए।

यज्ञशाला के पात्र

तो मेरे प्यारे! देखो जब पुनः यह कहा कि यजमान याग करना चाहता है कितने होता होने चाहिए? तो बेटा! देखो ऋषि कहता है सम्भवम्ब्रह्मे

वर्णा ब्रह्मा ब्रह्मचरिष्यामि। हे ब्रह्मचारी! यदि यजमान, होताजन याग करना चाहते हैं तो मानो देखो **तीन होताओं के द्वारा याग करना चाहिए।** वह तीन होता कौन से हैं बेटा! देखो तीन गुण हैं सतोगुण, रजोगुण और तमोगुण बेटा! इन तीनो गुणों को एकाग्र करते हुए मेरे प्यारे! देखो इनको जानना ही हमारा कर्तव्य है। सतोगुण में पालन है, रजोगुण में शासन है और तमोगुण में बेटा! उत्पत्ति का मूल है। विचार आता है बेटा! माता में यह तीनों गुण होते हैं। सतोगुण में बालक की पालना करती है और रजोगुण में बेटा! अनुशासन करती है, बाल्य को अनुशासन में ला देती है और तमोगुण में बेटा! उत्पत्ति के मूल में विद्यमान हो जाती है। **यही मानव में तीन प्रकार के गुण व्याप्त रहते हैं** और यही बेटा! देखो ब्रह्माण्ड में तीनो गुणों से गुणाधानम् हो रहा है। **तीन ही प्रकार के परमाणु हैं।** देखो सबसे प्रथम अग्नित्व, गुरुत्व, तरलत्व यह तीन प्रकार के परमाणु जो वैज्ञानिको के मध्य में होते हैं। उन्हीं परमाणुओं के ऊपर मिलान करता हुआ कहीं जल परमाणु का तरलत्व परमाणु को प्रधानता दे करके बेटा! जल में रमण करने लगते हैं और अन्तरिक्ष में प्रवेश कर देते हैं। जब अग्नि का तत्व प्रधान कर देते हैं, कहीं बेटा! गुरुत्व प्रधान करते हैं तो पृथ्वी के गर्भ में, पृथ्वी के ऊर्ध्वा भाग में गमन करने वाले यन्त्रों का निर्माण करते हैं तो बेटा! देखो इसी प्रकार तीन प्रकार के ये गुणधानम् हैं, तीन प्रकार के परमाणु है बेटा! तेजोमयी, तरलत्व और गुरुत्व, इन्हीं परमाणुओं में बेटा! देखो विज्ञान अपनी आभा में अपनी परिधि में बेटा! गमन कर रहा है। तो विचार आता रहता है देखो तीन ही शिक्षा के मानो शिक्षा प्रणाली में भी तीन ही शब्द हैं अ, उ और म की आभा में रमण करने वाला यह जगत अपने में देखो जगत्याम् कहलाता है। तो आओ बेटा! मैं इस सम्बन्ध में कोई विशेष चर्चा नहीं, विचार विनिमय क्या वेद का ऋषि कहता है हे यज्ञदत्ता तुम तीनों गुणधानम् देखो **तीन यज्ञशाला के पात्र कहलाते हैं** और तीन होताओं के द्वारा वह याग करे रजोगुण में सतोगुण को, सतोगुण को, रजोगुण को और रजोगुण को तमोगुण को बेटा! देखो यह तीन मनके एक ही सूत्र के मनके कहलाते हैं। **मेरे प्यारे! वही सतोगुण है, वही रजोगुण है, वही तमोगुण**

है, तीनो एक दूसरे के पूरक कहलाते हैं इनके ऊपर विचार-विनिमय करने से हमें प्रतीत होता है कि वास्तव में तीनों गुणो में प्रवेश हो जाना चाहिए।

ब्रह्म और प्रकृति

मेरे प्यारे! देखो जब यज्ञदत्त ने कहा प्रभु! मेरा अन्तिम चरण है कि यजमान याग करना चाहता है कितने होता होने चाहिए? **उन्होने कहा दो होताओं से देखो यजमान याग करें।** वह दो होता कौन से हैं बेटा! देखो ब्रह्म और प्रकृति, दोनों को एक सूत्र में ला करके और दोनों के साकल्य बना करके बेटा! अपने अन्तर्हृदय को ऊँचा बनाए और **हृदय से हृदय का मिलान होना ही मेरे प्यारे! देखो याग माना गया है।**

ब्रह्म

तो इस प्रकार तुम मानो देखो ब्रह्मणे दो से होताम् ब्रह्मे और दो भी न हों तो एक होता होना चाहिए। एकोकी ब्रह्म को स्वीकार करके बेटा! कण-कण को अपने में स्वीकार करके ब्रह्म की उपासना करनी चाहिए। ब्रह्म के द्वारा याग होना चाहिए। याग का अभिप्राय यह कि ब्रह्म की उपासना हृदय में हृदय-ग्राही बन करके मेरे प्यारे! देखो आध्यात्मिकवाद को उसमें प्रवेश कर दिया जाए। तो विचार आता रहता है मैं आज तुम्हें कोई विशेष चर्चा प्रगट करने नहीं आया, मैं कोई व्याख्याता नहीं हूँ केवल तुम्हें परिचय देने के लिए आया हूँ और ये परिचय यह है कि हम बेटा! एक दूसरे में समावेश होते रहें, एक दूसरे में एक दूसरे की प्रतिभा को अपने में धारण करते रहें। जिससे बेटा! हमारा जीवन एक महानता की वेदी में प्रवेश हो जाए और हम महान् बन करके बेटा! सागर से पार हो जाए। आओ मेरे प्यारे! आज का हमारा यह विचार क्या कह रहा है कि हम परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाते हुए और याज्ञिक बनें और एक दूसरे में क्योंकि **आध्यात्मिकवाद संसार में सर्वत्र याग है,** भौतिक-याग से प्रारम्भ होता है और आध्यात्मिक याग में बेटा! उसका समावेश हो जाता है। तो इस प्रकार के हम यागों में परणित हो जाएँ। बेटा! याज्ञवल्क्य मुनि महाराज

याज्ञिक भगवान् कृष्ण

भगवान् कृष्ण प्रातः सायंकाल यज्ञ करते थे। इतना सुन्दर यज्ञ होता था कि जब वे प्रातः और सायंकाल अपनी वचनावली से अमृत का पान कराते थे तो पक्षीगण भी मौन हो जाते थे। मुझे स्मरण है बेटा! एक समय वह यज्ञ कर रहे थे। यज्ञ के पश्चात् उन्होंने परमाणुवाद पर विचार-विनिमय करना प्रारम्भ कर दिया। जो यज्ञ में से परमाणुवाद उत्पन्न हुआ, उन परमाणुओं पर अध्ययन करना प्रारम्भ कर दिया। नाना प्रकार के यन्त्र, नाना प्रकार की वैज्ञानिक सामग्री भी उनके द्वारा रहती थी। उसी से वह उसका अध्ययन करने लगे। मुनिवरो! देखो, वह "यज्ञं ब्रह्म व्यापः" क्योंकि यज्ञ जिसमें संसार का साकल्य जब ओत-प्रोत किया जाता है, तो वही साकल्य यज्ञ वेदी को सुन्दर बना देता है। भगवान् कृष्ण एक समय यज्ञ पर अध्ययन कर रहे थे, उनकी धर्म देवी रुक्मिणी भी आ गई। उन्होंने कहा प्रभु! आप यह क्या कर रहे हैं? उन्होंने कहा देवी! मैं इस यज्ञ पर विचार-विनिमय कर रहा हूँ, जो मैंने प्रातः सुगन्धि की है उस सुगन्धि में कितनी तरङ्गे है और उनकी कितनी गति है इसका मैं अध्ययन कर रहा हूँ। उन्होंने (रुक्मिणी) कहा प्रभु! यह भी कोई विचार है? इनका अध्ययन करने से आपका क्या बनेगा? मैं यह जानना चाहती हूँ कि मेरे इस हृदय में, मेरे इन विचारों में कितनी तरङ्गे होती होंगी? उन्होंने कहा देवी! तुम्हारे हृदय में यह जो तरङ्गे हैं, इनका भी निवारण किया जा सकता है। इनकी भी गणना की जा सकती है, यदि इन वाक्यों में अभिमान नहीं होगा। जब तक अभिमान होगा, तब तक तुम यज्ञ स्वरूप को जान नहीं पाओगी। तो मेरे प्यारे! ऋषिवर! रुक्मिणी मौन हो गई, उनके चरणों में ओत-प्रोत होकर के उस समय उसका हृदय इतना परिवर्तन हो गया कि वे स्वयं पति के समीप विराजमान होकर के यज्ञ करती थीं ओर यज्ञ करते हुए रात्रि-रात्रि व्यतीत हो जाती थीं। यज्ञ के

ऊल्टे मार्ग पर गमन करता है इसलिए हमारा विचार केवल यह क्या आधुनिक जो काल है इसमें राजा और प्रजा दोनों ही वाम मार्गी बन रहे हैं और दोनों वाम मार्गी इसलिए की सुरा और सुन्दरी और देखो द्रव्य की लोलुपतता में अपनी मानवीयता को नष्ट कर रहे हैं।

वर्तमान का काल

तो इस प्रकार मैं कोई विचार देने नहीं आया हूँ केवल यह कि मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से यह निर्णय देना चाहता हूँ क्या आधुनिक काल में जो वर्तमान का काल चल रहा है यह बड़ा विचित्र काल है। यह वाम मार्ग काल मैं इसे कहता हूँ जहाँ राजा भी सुरा में लगा हुआ है प्रजा भी लगी हुई है। जहाँ देखो नाना प्रकार के सम्प्रदायों के आंगन में प्रत्येक मानव देखो अपने को स्वीकार कर रहा है। यह सम्प्रदायवाद और देखो यह राष्ट्रीयवाद का इससे विनाश होता जा रहा है। मैने कई कालो में वर्णन करते हुए कहा है यदि राजा अपने राष्ट्र को ऊँचा बनाना चाहता है तो राजा के राष्ट्र में चाहिए कि राजा को ब्रह्मवेत्ता होना चाहिए और ब्रह्मवेत्ता हो करके राजा के राष्ट्र में यह नाना प्रकार की रूढ़ियाँ नहीं रहनी चाहिए। यह जो रूढ़ि हैं यह राष्ट्रवाद की हानिप्रद कहलाती हैं, जैसे अमृतम् क्योंकि एक दूसरा रूढ़िवाद एक दूसरे को देखो अपने में रक्त को बहाना चाहता है। जैसे देखो ईश्वर के नाम पर जो भिन्न-भिन्न प्रकार की रूढ़ियाँ बन गई हैं और रूढ़ियाँ बन करके देखो ब्रह्मे ब्रतम राजा को चाहिए की ब्रह्मवेत्ता बन करके, ब्रह्मनिष्ठ बन करके और प्रत्येक आचार्यों का शास्त्रार्थ होना चाहिए। विचार विनिमय हो और जो मानव दर्शन पर जो स्थित हो जाए उसको स्वीकार कर लेना चाहिए यह इसका धर्म है। आज का राष्टवेत्ता कहता है कि हम धर्म निरेपक्ष बन गये हैं। जब धर्म की अपेक्षा तुम करोगे तो राजा किस वस्तु के हो, क्या तुम द्रव्य और सुरापान के लिए ही राजा बने हो? परन्तु जब मैं यह उद्गीत गाता हूँ तो मेरा अन्तरात्मा बड़ा खिन्न हो जाता हैं।

मानव का धर्म

मैं यह कहता रहता हूँ कि धर्म मानव ने देखो पृथ्वी के कणो में धर्म को स्वीकार कर लिया है। **मानव का जो धर्म है वह मानव की इन्द्रियों में समाहित रहता है।** नेत्रों में धर्म रहता है और घ्राण में धर्म रहता है। तो विचार विनिमय जब करता है तो वहाँ भी धर्म रहता है। यदि धर्म चला जाएगा तो मानव के जीवन का कोई अस्तित्व नहीं रहेगा। मैं यह कहता रहता हूँ कि धर्म, धर्म केवल देखो वह पर्वतो में स्वीकार कर लिया है मानव ने, राजा ने। अरे! उसकी अपेक्षा, धर्म की अपेक्षा करने वाला कोई राष्ट्र नहीं कहलाया जाता वह केवल देखो वह वाम मार्ग कहलाता है जिसमें अपने स्थार्थपरता में देखो मानव लगा हुआ है। अरे! **स्वार्थ को त्याग करके धर्म और मानवता को देखो दर्शनों की दृष्टि से विचारना चाहिए।** आज मैं विशेष चर्चा न देता हुआ केवल ये क्या राजा को चाहिए कि यहाँ देखो नाना प्रकार की रूढ़ियाँ है और रूढ़ियाँ में जो भी कृतियाँ हों उन्हें नष्ट कर देना चाहिए। धर्म और मानवीयता एक स्थली पर विद्यमान हो करके अपना विचार-विनिमय होना चाहिए। अभी-अभी मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने अपनी वार्ताएँ प्रगट की हैं परन्तु इसमें धर्मम ब्रह्मा इसमें धर्म ही नहीं है केवल, मानवता है, वैदिकवाद है और **वैदिकवाद और मानववाद का नाम ही धर्म माना गया है।** आज का विचार अब मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से आज्ञा पाऊँगा और केवल मेरा यह वाक् रहता है कि द्रव्य का दुरुपयोग नहीं होना चाहिए और देखो **अपने में धर्म और मानवता को अपना करके इस संसार सागर से पार होने का प्रयास होना चाहिए।** राजा को वाममार्गी, प्रजा को वाम मार्गी न बन करके यह केवल देखो अपनी मानवता को अपनाता चला जाए और यजमान तेरे गृह में सदैव द्रव्य का सदुपयोग होता रहे ऐसी मेरी सदैव कामना बनी रहती है। द्रव्य का सदुपयोग जहाँ होता है वही गृह पवित्र होता है, द्रव्य की जहाँ हीनता आ जाती है वही देखो नरक बन जाता है। नारकिक गृह को न बनाओ आज तुम्हारा यह कर्तव्य है। इसके

साथ आज का यह वाक् अब मैं अपने वाक्यों को विराम दे रहा हूँ। समय मिलेगा तो चर्चाए शेष प्रगट करेगें।

पूज्यपाद गुरुदेव

मेरे प्यारे ऋषिवर! अभी-अभी मेरे प्यारे! महानन्द जी ने अपना विचार दिया। इनके विचारों में बड़ी एक विडम्बना रहती है क्या राष्ट्र वाम मार्ग नहीं होना चाहिए और राष्ट्र में मानवता होनी चाहिए। धर्म और विज्ञान होना चाहिए ऐसा इनका मन्तव्य है। इनके मन्तव्य सदैव नवीनता को प्राप्त होते रहें। आज का यह वाक् समाप्त अब वेदो का पठन-पाठन।

मन्त्रपाठ

ओं देवाः आभ्यां मनु गतं आप्यां देवाः।
ओं सर्वं गतम्माहं वाचन्नमाः।
ओं सर्वं गतंम्भ्रिताः आ याः।।

अच्छा भगवन्।

दिनॉक : 18 फरवरी, 1992
समय : रात्रि 8 बजे।

❐❐

चतुर्वेद पारायण ब्रह्ममहायाग

परमपिता परमात्मा की सद्प्रेरणा एवं पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज के आर्शीवाद से **आचार्य श्री अरविन्द शास्त्री जी** के ब्रह्मतत्त्व में चतुर्वेद पारायण ब्रह्ममहायाग का आयोजन दिनाँक 2 अक्टूबर 2011 से 9 अक्टूबर 2011 तक मोहन आश्रम, हरिद्वार में कल्याणार्थ आयोजित किया जा रहा है। इस महायज्ञ में आप अपने सभी सम्बन्धियों एवम् मित्रों सहित आमन्त्रित है और तन, मन, धन से आहूति प्रदान करके धर्म लाभ उठाये।

आचार्य श्री अरविन्द शास्त्री (0) 9411823200

उद्‌बोधन

हे मानव! तू अपने जीवन को महान् और सुन्दर बना। जीवन को महान् और सुन्दर बनाने के लिए वेद ने घोषणा की है। वेद अमानवता की घोषणा नहीं करता। **वेद तो मानवता की घोषणा करता है।** विचार यह है कि **आज हम मानव बनें।** क्योंकि वेद का ऋषि यह कहता है ''मन वाचः प्रवे यौनस्तम् योनप्रवः मनुवाचः अस्वति देवः'' ऋषि कहते हैं। मानव शरीर न मानव है और न आत्मा है। **यह जो शरीर प्रभु ने दिया है, यह उस प्रभु की धरोहर है अथवा देन है जिसके ऊपर हमें विचारना है।**

परन्तु रहा यह वाक् यह हमारा जो मानव शरीर है यह योनिज शरीर है। परन्तु **मानव को मानव बनने के लिए कहा है।** मुनिवरो! शरीर के आकार से ही मानव नहीं बनता है। ऋषि-जन कहते हैं कि मानव का यह शरीर है परन्तु इस शरीर से ही मानव नहीं कहलाया जाता। **''मानव वह होता है जो मननशील होता है।''** जो प्रभु के राष्ट्र में मनन करता हैं क्या वस्तु मनन करता है? और ज्ञान और विज्ञान के मनन करने में उस दिव्य महान् प्रभु के आनन्दमय स्वरूप को दृष्टिपात करता है।'' क्योंकि हमारे जीवन का जो स्तम्भ है। सँसार का जो स्तम्भ है बेटा! वह मेरा प्यारा प्रभु कहलाया गया है। मेरे प्यारे महानन्द जी अभी-अभी कुछ अपने विचार संक्षिप्त रूप में देंगे। परन्तु आज हम इस सम्बन्ध में अपना विचार व्यक्त करने वाले हैं कि **वेद का ऋषि यह कहता है कि मानव बनो और मानव से ही देवता बनते हैं।** तो मुनिवरो! ''मानव और देवता बनना हमारा कर्त्तव्य है।'' क्योंकि मानव के हृदय में तरंगों की उद्‌बुधिता होती है। उन्हीं तरंगों से मानव की आकृति का आकार बन जाता है। अथवा वही **वाणी के द्वारा, प्राण के द्वारा, श्रोत्र के द्वारा उसका बाह्य स्वरूप बनता रहता है।** परन्तु वह जो बाह्य स्वरूप बनता है वही अमानवता में ले जाने वाला

अनुसंधान के विचार-विनिमय करने वाला ही महान् होता है बेटा! पति-पत्नी का सुन्दर यज्ञ होता है। गृह को सुन्दर उसी काल में बनाया जाता है जब पति-पत्नी यज्ञ के ऊपर, उसके परमाणुवाद के ऊपर सामग्री साकल्य पर नित्य प्रति विचार विनिमय करते हैं। विचार और सुगन्धि जब दोनों का मिलान होता है, दोनों का समन्वय होता है, तो बेटा! वह एक महान यज्ञ होता है उसकी महानता का वर्णन नहीं किया जाता।

भगवान राम और महर्षि लोमश मुनि जी का संवाद

मेरे प्यारे! देखो, वह (राम) महर्षि लोमश मुनि से यह कहा करते थे राम कि हे भगवन्! तुम भयंकर वन में क्या करते हो? उन्होंने कहा मैं वह कार्य करता हूँ, जो मुझे प्रभु ने आज्ञा दी है। प्रभु ने आपको क्या आज्ञा दी है? उन्होंने कहा प्रभु ने यह कहा है कि आत्मा को जानने का प्रयास करो। उन्होंने कहा आत्मा को जानने के लिए क्यों तुम प्रयास करते हो? उन्होंने कहा हमारे आने का, सँसार में, यही उद्देश्य रहा है। उन्होंने कहा उद्देश्य के लिए जन्म लेता है। मानो देखो, उन्होंने कहा यदि उद्देश्य के लिए मानव जन्म लेता है, तो उसे जनम नहीं लेना चाहिए। मेरे प्यारे! देखो महर्षि लोमश मुनि बोले हे वृहे! हे राम! मानो जो प्रसंग तुमने लिया है, वह दर्शन का, तप का और आनन्द का विषय है। जब मानव इस क्षेत्र में पारायण हो जाता है, तो उसके लिए जन्म की धारा उत्पन्न नहीं होती। मानो देखो, यह आनन्द तो स्वतः है, आनन्द आत्मा में है, आनन्द मानो देखो, उसकी क्रियाओं में है, आनन्द मानो देखो, उसके ज्ञान में है, आनन्द देखो, मानो जहाँ परमपिता परमात्मा सर्वज्ञ है, वहीं आनन्द है, इसीलिए देखो वह सर्वज्ञता में अपने को ले जाए तो उसे आनन्द ही आनन्द प्राप्त हो जाता है।

पूज्यपाद गुरुदेव

विजयदशमी

यह मानो ऐसा दिवस है कि लक्ष्मी वाले लक्ष्मी का पूजन करते हैं और छात्रवत् अपनी छात्रप्रवृत्ति का पूजन करते हैं और यही क्षत्रीय हैं, जो मानो देखो, अपने अस्त्रों-शस्त्रों का पूजन करते हैं और वे अस्त्रों-शस्त्रों को क्रिया में लाने का प्रयास करते हैं। मानो देखो, सब अपने-अपने वह ब्राह्मणजन अपने कर्मकाण्ड में परणित हो करके, कर्मकाण्ड की मानो पोथियों को लेकरके, कर्मकाण्ड का शोधन करते रहते हैं, वह उसका पूजन करते हैं। तो इसी प्रकार मानव को विचारना चाहिए कि यह आज का जो दिवस है, सृष्टि के प्रारम्भ से गतिवान हो रहा है और यह मानवीय मस्तिष्कों में अपनी-अपनी स्थलियों को लिये हुए गमन करता रहता है। क्षत्रीयजन कहते हैं कि हम अपने अस्त्रों-शस्त्रों का, मानो देखो, आज के दिवस से अभ्यास करते हैं अभयस्त करने लगते हैं।

मुनिवरो! देखो, यह वो दिवस है, जहाँ देखो त्रेता के काल में, मैं तुम्हें ले जाना चाहूंगा, तो मानो देखो, **यह वो दिवस है, जब महर्षि विश्वामित्र ने सबसे प्रथम धनुर्याग का आयोजन किया और धनुर्याग में, ब्रह्मचारियों को, क्षत्रीय बल को जब एकत्रित करने के लिए उन्होंने अस्त्रों-शस्त्रों का अभ्यास प्रारम्भ कराया। यह वो दिवस है जिसमें अभ्यास कराया जाता है और यंत्रों का अभ्यस्त कराया जाता है। मेरे प्यारे! देखो, महर्षि भारद्वाज मुनि के यहाँ भी, यह वो ही दिवस है, जहाँ देखो ब्रह्मचारी कबंधी ने एक अग्नि-अस्त्र का निर्माण किया था** और वह निर्माण, मानो देखो, अग्नि-अस्त्र का निर्माण करके उसका अभ्यास कराया गया तो यह यंत्र इतना शक्तिशाली बन करके रहा कि वह, मानो देखो, अग्नि का एक नृत्य बन गया था, अग्निकांड हो गये थे। तो इसी प्रकार मानो यह वो 'दिवसम् अमृतम्' देखो जो अमृता कहलाता है, जो 'दशम्ब्रह्वे कृतम' एक दिवस है, इसका अपने

में बड़ा महत्त्व माना गया है। मानो यह वो दिवस कहलाता है, इसी दिवस में मेरे पुत्रो! लक्ष्मी का पूजन किया जाता है। लक्ष्मी, गृह में आने के लिए तत्पर हो जाती है और देखो कृषक के यहाँ इस दिवस में नवीन् अन्न, देखो उसके गृह में प्रवेश करता है। उसके गृह में प्रवेश करता है तो उसका वो पूजन करता है। गृह में लाना, मानो देखो, खलियान से गृह में लाना ही, उसका पूजन कहलाता है। मानो देखो, **यह वो दिवस है, जहाँ, मानव दसों इन्द्रियों के ऊपर संयम करता हुआ और देखो उनका साकल्य बना करके, जो ब्रह्म में परणित होने के लिए तत्पर होता है, वह ब्रह्माग्निवादी बन जाता है।**

विचार आता रहता है कि **यह वो दिवस है, जहाँ, मुनिवरो! देखो, भगवान् राम ने रावण का वध किया था।** मानो रावण का अंतिम श्वास इसी दिवस, मानो देखो, अमरावती को प्राप्त हो गया था। मेरे पुत्रो! देखो, यह वो दिवस है, जिस दिवस में, देखो 'अमृता' विजय का एक अग्रित कर दिया जाता है, यहाँ विजय-याग का अंतिम चरण समाप्त हो जाता है।

पूज्यपाद गुरुदेव

सूचना

सभी आजीवन सदस्यों को यौगिक प्रवचन मासिक पत्रिका भेजी जा रही है। पत्रिका प्रत्येक मास की 10\11 तारीख को प्रेषित की जाती है। किसी आजीवन/वार्षिक सदस्य को पत्रिका प्राप्त न होने की स्थिति में हमें एक सप्ताह के बाद लिखें। सूचना मिलने पर पत्रिका पुनः प्रेषित करेंगे।

डॉ. मधुसूदन, ए-59 पँचशील एन्क्लेव, नई दिल्ली 110017

दूरभाष : (0) 11-26498737

E-Mail :-contact @ shringirishi.in,

बेवसाईट (www.shringirishi.in)

वैदिक अनुसन्धान समिति (पंजी.)

नयी कार्यकारिणी का निर्वाचन

वैदिक अनुसन्धान समिति (पंजी.) की साधारण सभा दिनाँक 10-7-2011 को आर्य समाज मन्दिर मालवीय नगर, नई दिल्ली में आयोजित हुई जिसमें नयी कार्यकारिणी का विधिवत चुनाव सर्वसम्मति से हुआ

प्रधान	:	श्री रविप्रकाश गुप्ता।
उप प्रधान	:	श्री ब्रज खोसला।
मन्त्री	:	सुशील त्यागी।
उप मन्त्री	:	श्रीमति रविला गुप्ता।
कोषाध्यक्ष	:	सुश्री नीरू अबरोल।
प्रकाशन मन्त्री	:	डॉ. मधुसूदन।
प्रचार मन्त्री	:	श्री जितेन्द्र चौधरी।
संरक्षक	:	श्री हरीराम गुप्ता।
सदस्य	:	श्री अजय शर्मा।
	:	श्री पतराम त्यागी।
	:	श्री धनवीर दत्त शर्मा।
	:	श्री विनोद कद।
	:	श्री रामनिवास त्यागी।
	:	श्री सुकेश त्यागी।
	:	श्री जितेन्द्र बन्सल।

वैदिक अनुसन्धान समीति (पंजी.) की कार्यकारिणी की बैठक दिनाँक 7-8-2011 को हुई जिसमें सर्वसम्मति से निम्न सदस्यों को कार्यकारिणी की आगामी बैठकों में भाग लेने के लिए विशेष आमन्त्रित सदस्यों के रूप में चुना गया :

1. डॉ. राम कुमार गोयल
2. डॉ. कृष्णावतार
3. श्री संजीव त्यागी
4. श्री सुमन शर्मा
5. श्री मूलचन्द जी

है। **उस बाह्य स्वरूप को जब अन्तरात्मा में हम दृष्टिपात करने लगते हैं। अन्तरात्मा में उसका हम दिग्दर्शन करते हैं तो मानव का जीवन एक आनन्दमय हो जाता है और उस पवित्रता में परणित हो जाता है।**

यहाँ वेद का ऋषि कहता है, 'यज्ञम् ब्रह्मे व्यापः''। **हे मानव! तू सँसार में याज्ञिक बन।** परन्तु कैसा याज्ञिक बन? यज्ञ कर्म करने वाला बन। क्योंकि यज्ञ ही तेरा कर्म है। मानो **जितना भी शुभ-कर्म है वह सर्वत्र ही यज्ञ कहलाया गया है।** आओ, मेरे प्यारे! आज मैं अधिक विवेचना नहीं प्रकट करूँगा। विचार-विनिमय यह कि आज हम अपने प्यारे प्रभु का गुण-गान गाते हुए याज्ञिक बनते चले जाएँ। **प्रभु की आभा का दिग्दर्शन करते रहें।** यही हमारा जीवन है।

पूज्यपाद गुरुदेव

मासिक सहयोगी

श्री हरीराम गुप्ता, केसर स्टील, वजीरपुर, दिल्ली	1000 रुपये
श्री मैं. ओम् बायो इन्डस्ट्रीज धीर खेड़ा हापुड़ (श्री सुरेश त्यागी व श्री विवेक त्यागी)	1000 रुपये
श्री अरुण त्यागी, राजनगर, गाजियाबाद	500 रुपये
श्री सुकेश त्यागी, आर. के. पुरम, नई दिल्ली	500 रुपये
श्री संजीव त्यागी (दिनकरपुर) फरीदाबाद	500 रुपये
श्री विनोद त्यागी, सुपुत्रश्री-जयप्रकाशजी मकनपुर, गाजि.	500 रुपये
श्री पूनम त्यागी, नोएडा	500 रुपये
श्री वी. पी. सिंह, होशियारपुर, पंजाब	500 रुपये
डॉ. शुचि, डॉ. राजीव, आणद, गुजरात	250 रुपये
श्री नानकचन्द, देहरादून	200 रुपये
श्रीमती शशि गुप्ता, नोएडा,	125 रुपये
डॉ. ओ. पी. आर्य, आगरा	125 रुपये
श्री गुलजार सिंह, जगत पुरी, कृष्णा नगर, दिल्ली	100 रुपये
श्रीमती वीना त्यागी, अलीगढ़।	100 रुपये

दान

वैदिक अनुसन्धान समीति के प्रकाशन के कार्य के लिए निम्न याज्ञिक एवम् श्रद्धालू महानुभावओं ने अपना सात्विक सहयोग प्रदान किया है

1.	हेमराज त्यागी, रामपुर, हापुड़।	1100-00
2.	अनुज कुमार, मेरठ।	1100-00
3.	लोमश सिरोहा, सर्वोदय कालोनी, हापुड़।	1500-00
4.	श्री यादराम, सरधना, मेरठ।	100-00
5.	श्री कन्हैया लाल, सरधना, मेरठ।	101-00
6.	श्री प्रवीण कुमार, इन्द्री, करनाल।	100-00
7.	श्री गजेसिंह, मुलसम।	100-00
8.	श्री नरदेव, निगम देव, खंदावली मेरठ।	50-00
9.	श्री रामफल, मूली सरधना, मेरठ।	50-00
10.	श्री प्रेमपाल त्रिपाठी, स्काईलार्क एपार्टमेन्ट, गा.।	255-00
11.	श्री भगीरथ शर्मा, दाहा	155-00
12.	श्री मनीष कुमार, दिल्ली गेट नई दिल्ली।	1100-00
13.	श्री कमल सिंह, मोदीनगर।	101-00
14.	श्री हर्ष कुमार, सुपुत्र श्री यशपाल सिंह	50-00
15.	श्री रनधीर सिंह, मड़ीगुड्डा मेरठ।	101-00
16.	श्री राजेन्द्रपाल त्यागी, रहदरा मेरठ।	101-00
17.	श्री अमरीश, कुदबी मुज्जफरनगर	20-00
18.	श्री सीता राम जी, एलम, शास्त्री नगर मु.।	100-00
19.	श्री राम भजन सिंह, पुदीनाकला मु.।	250-00
20.	श्री बालक राम शर्मा, नारंगपुर।	21-00
21.	गुप्त दान	21-00
22.	गुप्त दान	50-00
23.	श्री लक्ष्मी सर्वोदय कालोनी हापुड़।	500-00
23.	श्री वीर सिंह पटेलनगर मोदीनगर।	100-00

24.	डॉ. ओमप्रकाश शर्मा, एण्ड श्रीमति प्रकाशवती शर्मा डॉ पुष्पेन्द्र शर्मा, ननोता।	250-00
25.	श्रीमती शान्ती अबरोल लाजपत नगर नई दिल्ली।	1101-00
26.	मास्टर शिवराज त्यागी व विपिन त्यागी वसुन्धरा गा.।	250-00

सभी उपरोक्त दान दाताओं का समीति हृदय से आभार प्रकट करती है और उनको परिवार सहित जीवन में सर्वतोन्मुखी समृद्धि के लिए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती है।

चतुर्वेद पारायण ब्रह्म महायाग

(सामूहिक)

परमपिता परमात्मा की असीम अनुकम्पा से पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज (शृङ्गी ऋषि जी) के शुभाशीर्वाद से चतुर्वेद पारायण ब्रह्म महायाग का आयोजन रामलीला मैदान, गाँधी नगर **सरधना** (मेरठ) में दिनाँक 16-10-2011 से 23-10-2011 तक सार्वजनिक सहयोग से आयोजित किया जा रहा है। आप इस महायज्ञ में अपने परिवार एवम् अपने सगे सम्बन्धियों सहित सादर आमन्त्रित हैं। अतः इस महायज्ञ में पधार कर पुण्य लाभ अर्जित करे एवम् तन-मन-धन से सहयोग प्रदान करें।

निवेदक व आयोजक

श्री कन्हैया लाल त्यागी (प्रधान) श्री कर्ण गोस्वामी (मन्त्री) श्री बीरसिंह, व श्री राधेश्याम (कोषाध्यक्ष)

एवम्

सभी सदस्य गण वैदिक यज्ञ समीति, सरधना।

सभी क्षेत्रीय आर्य समाज, सरधना क्षेत्र मेरठ।

सितम्बर 2011/यौगिक प्रवचन

पुस्तक प्राप्ति के स्थान

योगनिष्ठ पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज की अमृतवाणी का साहित्य संहीता, कैसेट्स, सी. डी. व डी. वी. डी. के रूप में निम्न स्थानों पर उपलब्ध हैः

1. श्री महानन्द संस्कृत महाविद्यालय, लाक्षागृह, बरनावा, जि. बागपत, (उ. प्र.)। दूरभाष : 01234 240395
2. श्री गुरुवचन शास्त्री, मकान नं. 165/30ए, दक्षिणी भोपा रोड़, निकट माढ़ी की धर्मशाला, नई मण्डी, मुजफ्फरनगर (उ. प्र.)। दूरभाष : 0131 2606414
3. सुश्री. नीरू अबरोल, के-3 लाजपत नगर-3, नई दिल्ली। दूरभाष : 011-41721294
4. डॉ. मधुसूदन, A-59 पंचशील एन्क्लेव नई दिल्ली। 110017 दूरभाष : 011-26498737
5. श्री सुशील त्यागी, सी-47 रामप्रस्थ, गाजियाबाद (उ. प्र.)। दूरभाष : 0120-4165802
6. श्री लोमश त्यागी, 106/4 पंचशील कालोनी गढ़ रोड़, मेरठ, (उ. प्र.) दूरभाष : 9412002233
7. सुमन कुमार शर्मा, जे-380, सैक्टर बीटा-2, ग्रेटर नोएड़ा, (उ. प्र.) दूरभाष : 9313530505
8. श्री विवेक त्यागी, 16, अशोक कॉलोनो, अल्कापुरी, हापुड, (उ. प्र.)। दूरभाष : 0122-2316196
9. मैं. हर्ष मोडिकोज, ए-2/31, सैक्टर-110, मार्किट नोएडा, (उ. प्र.) फेस-2, दूरभाष : 0120-6417159, 9873185418
10. श्री संजीव त्यागी, 1107, सैक्टर-3, बल्लभगढ़, फरीदाबाद हरयाणा।
11. श्रीमती बाला, 251, दिल्ली गेट, नई दिल्ली। दूरभाष : 011-23282088
12. श्री पूनम त्यागी, 96-A, सैक्टर-10 नोएडा, उत्तर प्रदेश।
13. मैं. गोविन्द राम, हासानन्द, 4408, नई सड़क, दिल्ली। दूरभाष : 011-23977216
14. श्री सतीश भारद्वाज, ग्राम बहेडी, रोहाना मिल, जिला मुजफ्फरनगर (उ. प्र.)।
15. श्री सुनील बंसल, ई. 129, गली नं. 8, सरूप नगर, दाता मन्दिर के पास, नई दिल्ली 110042
16. जवाहर बुक डिपो, बुढ़ाना गेट, आर्य समाज मेरठ शहर (उ. प्र.)।

वर्ष 39 अंक 468
सितम्बर, 2011

मूल्य :
पाँच रूपये

POSTED AT N.D.PS.O ON 10/11-09-2011

सितम्बर 2011/यौगिक प्रवचन